International Journal in Commerce, IT and Social Sciences
Volume 10 Issue 3, March 2023 ISSN: 2394-5702 Impact Factor: 6.984
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

हड़प्पा संस्कृति की लोक कलात्मक मृण्मूर्तियाँ –

एक पुरातात्विक दृष्टि

डॉ0 प्रदीप सिंह

विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, टी0डी0 पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

'प्राचीन भारतीय संस्कृति के विकास में लोक कलात्मक मृण्मूर्तियों का विशेष योगदान रहा है, वे प्राणतत्व के रूप में सभी कालों में विद्मान हैं। हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों से सैकड़ों की संख्या में मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुयी हैं। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा तथा चन्हूदड़ों के विभिन्न स्तरों से प्राप्त मृण्मूर्तियों में कुछ संरचनात्मक विभेद परिलक्षित होता है, ये मूर्तियाँ बढ़िया गुथी हुई मिट्टी की बनी हुयी हैं। सम्भवतः मूर्तिकारों तथा कुम्हारों को मूर्ति निर्माण हेतु किसी स्थान विशेष से मिट्टी प्राप्त होती रही होगी। मूर्तियों का निर्माण हाथ से ही किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय ठप्पे का प्रयोग कम होता था। भट्ठे में तपकर मूर्तियों का रंग हल्का या गहरा लाल हो जाया करता था, किन्तु कभी–कभी इसके ऊपर लाल रंग की पालिश कर दी जाती थी। लाल रंगों के अतिरिक्त और रंगों का अलंकरण इन मूर्तियों पर किया जाता था। कुछ मानव मृण्मूर्तियों में लाल आभूषण, आँख तथा मुँह आदि को पृथक– पृथक रंगों की रेखाओं से प्रदर्शित किया गया है। चन्हूदड़ों से प्राप्त कुछ पशु मूर्तियों के शरीर को भी रंगीन रेखाओं के अलंकरण से चित्रित किया गया है। हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त इन मृण्मूर्तियों को निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है।

१. मानव मूर्तियाँ, २. पशु मूर्तियाँ, ३. बच्चों के खिलौने

मानव मूर्तियाँ– मानव मूर्तियों में नारी और पुरुष दोनों की ही मूर्तियाँ हैं। **नारी मूर्तियाँ**– हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख नगर मोहनजोदड़ों तथा हड़प्पा के उत्खनन के परिणामस्वरूप नारियों की अनेक मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनका निर्माण कई शैलियों में किया गया है। अधिकतर नारी–मूर्तियों के सिर पर पंखे के आकार की किसी वस्तु को दिखाया गया है। आँख तथा स्तन मिट्टी के गोल टुकड़ों से और आभूषण तथा मेखला को अलग से चिपकाकर निर्मित किया गया है। नाक को तो प्रायः चुटकी से गालों को दबाकर उभाड़ दिया गया है। एक दो उदाहरणों में नथुने भी दिखायी पड़ते हैं। मूर्तियों में कमर के ऊपर एक छोटा पटका दिखाया गया है, अधिकांश मूर्तियों के हाथ खण्डित हो चुके हैं, पैर सीधे तने की तरह हैं, उनमें उँगलिया आदि दिखलाने का कोई यत्न नहीं किया गया है, कुछ मृण्मूर्तियों में स्त्रियों के पेट उभरे हुए दिखायी देते हैं, शिरोभूषा में भी विविधता है। चन्हूदड़ों से प्राप्त नारी मृण्मूर्तियों में अधिकांश को पगड़ी धारण किये हुए प्रदर्शित किया गया है, आँखे गोल पहियों द्वारा, जिनके बीच में छिद्र है, दिखायी गयी हैं, पेट उभरे हुए हैं, किसी भी मूर्ति में पैर का प्रदर्शन नहीं किया गया है, मूर्तियों के गले में कंठहार (आभूषण) का अंकन किया गया है।[1] इस शैली की मूर्तियाँ आरिएल स्टाईन को बलूचिस्तान से भी प्राप्त हुयी थी।[2] हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त समग्र नारी मृण्मूर्तियों की गणना दो रूपों में की जा सकती है।

१. मातृ–देवी की मूर्तियाँ, २. घरेलू जीवन से संबंधित मूर्तियाँ

१. मातृ देवी की मूर्तियाँ–

मोहनजोदड़ों, हड़प्पा, चन्हूदड़ों तथा अन्य स्थानों से मिट्टी की बनी हुयी कुछ विशिष्ट नारी मूर्तियों को पुरातत्वविद् मातृदेवी की मूर्तियाँ स्वीकार करते हैं, ये मूर्तियाँ प्रायः नग्न रूप में, अपने अधोभाग में एक पटका, जो कि एक मेखला से बँधा हुआ है, को धारण किये हुऐ हैं। पैर सीधे डंडे की तरह तने हुए हैं, जिसमें अँगुलियाँ नहीं दिखायी गयी हैं। गले मे कई लड़ियों की माला है और आँखे मिट्टी की गोल बत्तियाँ बनाकर पिरोई गई है, सिर पर पंखे के सदृश एक ऊँची शिरोभूषा है, जो किसी नारे से थमी हुई जान पड़ती है। कुछ मूर्तियों के कानों के स्थान पर प्याले सदृश वस्तु प्रदर्शित की गयी है। ऐसी मूर्तियों के गले पर गुलूबन्द जैसा आभूषण भी पड़ा हुआ है। वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार नारी मृण्मूर्तियों के सिर पर पंखे के सदृश निर्मित आभरण ऋग्वेद में वर्णित ओपश जान पड़ता है।[3] मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक नारी मृण्मूर्ति के बाल पहियादार हैं तथा उनके कानों में झुमके, बाहुओं में भुजबन्द, गले में कंठा और वक्ष पर लटकते छोटे–बड़े कई हार प्रदर्शित किये गये हैं। मूर्ति के जंघे के नीचे का हिस्सा खण्डित हो चुका है। आँखों की मिट्टी की गोल बत्तियों की पुतलियाँ प्रदर्शित हैं। इस मूर्ति की नासिका लम्बी होने के साथ ही साथ ढलुएँ माथे के सीध में दिखायी गयी है। हार के दोनों तरफ उन्नत उरोज स्वाभाविक रूप से निर्मित हैं। यह मूर्ति सौन्दर्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। कलाकार ने स्पष्टतः मूर्ति के अलंकरण में विशेष रुचि दिखायी है। अग्रवाल की सम्मति में इस मूर्ति के द्वारा किसी देवी को कला में मूर्त रूप देने का प्रयास प्रतीत होता है।[4] एक दूसरी मूर्ति जिसकी भुजा खण्डित हो गयी है, में इसी प्रकार का अलंकरण दिखाया गया है। उसके मस्तक ऊपर उठे हुए पंखे के सदृश पतले रूप में हैं और उनमें उंगलियों को दिखाने का प्रयत्न नहीं किया गया है।[5] हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त मिट्टी की बनी हुयी कुछ नारी मूर्तियों के कमर भाग के पास एक शिशु का भी प्रदर्शन

हुआ है। साथ ही कुछ मूर्तियों का उदर भाग फूला हुआ है, जो सम्भवतः गर्भवती रूप में है। इन मूर्तियों से मातृ रूप और मातृ भाव का स्पष्ट संकेत मिलता है। मातृ देवी की इन मूर्तियों में कुल्ली संस्कृति से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं। इसमें से कुछ नारी मूर्तियाँ दो शिशुओं को लिये हुए बनी हुई हैं। बलूचिस्तान की ही दूसरी संस्कृति झोव से प्राप्त नारी मृण्मूर्तियों के आँख के कोटर खाली हैं, जो अत्यन्त भयावह हैं और स्टुअर्ट पिगट के विचार से ये मूर्तियाँ मातृ शक्ति के उस स्वरूप को बताती है, जिसमें वह भूमिगत जगत की स्वामिनी समझी जाती थी।[6] इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त विशिष्ट नारी मृण्मूर्तियों से ज्ञात होता है कि तत्कालीन लोगों के धार्मिक जीवन में मातृ–देवी की उपासना का महत्वपूर्ण स्थान था। अलंकरण की समानता, शैली की एकरूपता एवं विस्तृत प्रदेश में इन मूर्तियों की प्राप्ति से यही ज्ञात होता है कि उनका निर्माण धार्मिक पूजा के लिए किया गया था। यह निश्चित है कि सिन्धु घाटी के लोगों में अपने पीछे मातृका पूजन की परम्परा छोड़ी, जिसे भारतीय लोगों ने शक्ति देवी, माता देवी एवं ग्राम देवी के रूप में स्वीकार किया।[7]

घरेलू जीवन से सम्बन्धित मूर्तियाँ –

हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त कुछ मृण्मूर्तियाँ घरेलू जीवन से सम्बन्धित प्रतीत होती हैं। इन मूर्तियों को विभिन्न रूपों में प्रदर्शित किया गया है । कहीं पर शिशु को स्तनपान कराते हुए प्रदर्शित है, जिसमें शिशु का वास्तविक रूप स्पष्ट नहीं होता है, उसे मिट्टी के सादे टुकड़े से मात्र प्रदर्शित कर दिया गया है। इस प्रकार की मृण्मूर्तियों की प्राप्ति अधिकतर खण्डहरों के निचले स्तरों से ही होती है। माता और शिशु का चित्रण तो भारतीय कला में बाद के युगों में भी अत्यन्त लोकप्रिय रहा है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक नारी मृण्मूर्ति के उदाहरण में स्त्री दोनों हाथों से एक टोकरी सदृश पात्र पकड़े हुए है, जिसमें कुछ अस्पष्ट पदार्थ रखे हुए हैं, कुछ गर्भवती स्त्रियों की मृण्मूर्तियाँ भी खुदाई में प्राप्त हुयी हैं। हड़प्पा से प्राप्त मिट्टी की एक मोटी तख्ती पर गर्भवती नारी को लेटे हुए निर्मित किया गया है।[8] दूसरे उदाहरण में एक स्त्री सिर पर किसी पात्र में रोटी जैसी वस्तु लिये हुए दिखायी गयी है, किन्तु यह कहना कठिन है कि निर्माणकर्ता को इस प्रकार की मृण्मूर्तियाँ निर्मित करने के पीछे क्या मंशा थी। मार्शल के मतानुसार सम्भवतः यह किसी मन्दिर की उपासिका है और किसी पवित्र या पूजन वस्तु को सिर पर रखे हुए है। कुछ मृण्मूर्तियों में स्त्रियाँ तीन पैर वाले कुर्सियों पर बैठी हुई दिखायी गयी हैं। मोहनजोदड़ो से दो ऐसी मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुयी हैं जिसमें स्त्रियाँ पलंग पर लेटी हुई प्रदर्शित हैं।

नारी मृण्मूर्तियों के अलंकरण –

हड़प्पा सभ्यता से जितनी भी मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुयी हैं, वे बहुत से आभूषण धारण किये हुए हैं, किन्तु इन सभी आभूषणों के ठीक रूप से जानना असम्भव है। कुम्हार या कलाकार का प्रयोजन आभूषणों को संकेत करना मात्र प्रतीत होता है, आकार और शैली की तरफ कलाकारों ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया है। मिट्टी के बने हुए जो बाजूबन्द हैं वे बड़े ही कुरुप हैं, इनमें से कुछ पकाकर कड़े कर दिये गये हैं, कुछ के बाजूबन्द पर लिखावट भी दृष्टिगत होती है, जिसका कोई विशेष महत्व प्रतीत होता है, त्रिकोण ढंग का आभरण जिसे अधिकांश नारी मृण्मूर्तियों के सिर पर प्रदर्शित किया गया है, हड़प्पा सभ्यता का बहुप्रचलित अलंकरण प्रतीत होता है। हड़प्पा की कई मृण्मूर्तियों में भी इस आभूषण को दिखाया गया है। इस विशिष्ट आभरण के निर्माण में अधिकतर चीनी मिट्टी को प्रयोग में लाया गया है। हड़प्पा–सभ्यता से प्राप्त नारी मृण्मूर्तियों के गले में छोटे–बड़े हारों को भी प्रदर्शित किया गया है। इन मृण्मूर्तियों में गले के हार को मिट्टी की गुरियों से भी बनाया गया है, इनके ऊपर सम्भव है कि कुछ रंग या अलंकरण भी किया जाता रहा हो, कुछ मृण्मूर्तियों के गले में प्रदर्शित पट्टी की पहचान किसी विशेष आभूषण के रूप में करना कठिन सा है। कुछ मूर्तियों को समीप से परखने पर प्रतीत होता है कि इस अलंकरण को कई छल्लों से जोड़कर निर्मित किया गया है। भारत में आज भी इस प्रकार का आभूषण नारियों द्वारा व्यवहार में लाया जाता है जिसे गुलूबन्द कहा जाता है, किन्तु इसका निर्माण कई छल्लों को जोड़कर नहीं किया जाता है, सम्भव है कि देश के कुछ विशेष भागों में इसका निर्माण कई छल्लों को जोड़कर किया जाता हो। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि हड़प्पा सभ्यता की मृण्मूर्तियों में प्रदर्शित यह आभरण इसी गुलूबंद का कोई पूर्व रूप रहा हो, हड़प्पा से प्राप्त कुछ नारी मृण्मूर्तियों के सिरों पर पुष्प जड़े हुए प्रदर्शित किये गये हैं। बाद की भारतीय कला में तो नारियों की वेणियों में पुष्प का प्रदर्शन अनेक रूपों में किया गया है। शुंग कालीन मृण्मूर्तियों में तो हम देखते हैं कि शिरोभूषा पूर्णतया पुष्पों से आच्छादित है। हड़प्पा सभ्यता की नारी मृण्मूर्तियों के वस्त्र साधारणतया मिट्टी की पहियों से निर्मित किये गये हैं, जिनके रंग या कताई के बारे में कोई निश्चित निष्कर्ष निकालना सम्भव नहीं है, मूर्तियों के अधोभाग में लटकता हुआ एक पटका पड़ा हुआ है और कभी–कभी इसे फुल्लों से अलंकृत भी दिखाया गया है।

पुरुष मृण्मूर्तियाँ –

हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त मिट्टी की बनी हुई पुरुष मूर्तियाँ अपनी लम्बी नाक, ढलुआ सिर और ऊपर से चिपकाये हुए मुख के कारण शिल्प की दृष्टि से बहुत उत्कृष्ट नहीं जान पड़ती हैं। कुछ मूर्तियों के सिर पर सींग भी दिखलाया गया है साथ ही सींगदार मुखौटे भी प्राप्त हुए हैं, जो पीछे की ओर खोखले हैं और उनके किनारे

पर छिद्र बने हैं। मूर्तियों के निर्माण में साँचे का प्रयोग बहुत ही कम किया गया है। हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों से पुरुष मृण्मूर्तियों के उदाहरण बहुत कम संख्या में प्राप्त हैं। जिसमें से अधिकांश मूर्तियों को नग्न रूप में प्रदर्शित किया गया है, मूर्तियों को खड़े और बैठे दोनों ही रूपों में दिखाया गया है। बैठी हुई मूर्तियाँ अपनी भुजाओं के द्वारा घुटनों को घेरे हुए अथवा हाथ जोड़े हुए रूप में निर्मित हैं। मूर्तियों के सिर प्रायः नग्न हैं, किन्तु कहीं–कहीं बालों को थामने के लिए एक नारे का प्रयोग किया गया है। मोहनजोदड़ो तथा चन्हूदड़ो की कुछ पुरुष आकृतियों के गले में एक धागा–सा दिखायी पड़ता है। सम्भव है कि ताबीज आदि पहनने के लिए लोगों के द्वारा गले में धागा धारण किया जाता रहा हो। मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मिट्टी निर्मित मानव मूर्ति में ठप्पे से निकाले हुए दो सिर जोड़े गये हैं। दोनों ही सिरों की मुखाकृति समान हैं, इस द्विमुख मूर्ति के गले से नीचे का भाग खण्डित हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस मूर्ति के द्वारा किसी विशिष्ट देवता का अंकन अभीष्ट था। इस बात की भी सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि दो पृथक–पृथक मुखों का प्रदर्शन अर्द्धनारीश्वर की कल्पना को मूर्त रूप देने का एक प्रयास हो। सींग धारण किये हुए पुरुषों की कई मृण्मूर्तियाँ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के अवशेषों से प्राप्त हुई हैं, एक उदाहरण में तो जिसके सिर पर केवल एक ही सींग रह पाया है, के गले पर कालर जैसी वस्तु को दिखाया गया है, एक दूसरी मृण्मूर्ति में सिर के ऊपर प्रदर्शित दोनों सींगों के अग्रभाग टूट गये हैं। साँचे के द्वारा निर्मित कुछ सींगधारी मुखौटे भी प्राप्त हुए हैं जो पीछे की तरफ से खोखले हैं और उनके एक किनारे पर छिद्र बने हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि ये मुखौटे लकड़ी या अन्य किसी वस्तु पर लगाये जाते रहे होंगे, ऐसा भी माना जा सकता है कि अपशकुनी आत्माओं के भय से दरवाजों के ऊपर इन मुखौटों को लगाया जाता हो या जानवरों से खेतों की रक्षा के लिए इसे टाँग दिया जाता हो । विभिन्न धार्मिक अवसरों एवं उत्सवों पर भी इन मुखौटों के उपयोग की सम्भावना हो सकती है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त मिट्टी की दो मानव आकृतियों को पुरातत्वशास्त्रियों ने नर्तकी की मूर्तियाँ स्वीकार की है। इन मूर्तियों के पैरों के घुमाव से ज्ञात होता है कि वे नृत्य मुद्रा में हैं, ऐसा नृत्य सम्भवतः किसी विशेष सम्प्रदाय के लोगों के मध्य प्रचलित रहा होगा, यह भी सम्भव है कि किसी विशेष संस्कार या कर्मकाण्ड के अवसर पर आयोजित उत्सवों में पुरुषों द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया जाता हो।[9] हड़प्पा सभ्यता से मिट्टी की मुहरों पर भी नृत्य के दृश्य प्रस्तुत किये गये हैं एक मुहर पर मनुष्य को सामूहिक रूप से नृत्य करते हुए और एक व्यक्ति को ढोल बजाते हुए प्रदर्शित किया गया है। इस नृत्य का सम्बन्ध किसी देवी या देवता को प्रसन्न करने अथवा किसी विशेष उत्सव या धार्मिक पद्धति से प्रतीत होता है।[10] मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा से प्राप्त कुछ पुरुष मूर्तियों के ठुड्डियों पर दाढ़ी के बाल भी प्रदर्शित किये गये हैं। लोथल के उत्खनन के फलस्वरूप भी कुछ ऐसी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिसमें दाढ़ी को बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रदर्शित किया गया है।

पशु मूर्तियाँ –

हड़प्पा सभ्यता से सर्वाधिक पशु मृण्मूर्तियाँ ही प्राप्त हुई हैं। सर्वाधिक संख्या में इनकी प्राप्ति इस बात को दर्शाती है कि हड़प्पा वासियों के जीवन में पशु–पक्षियों का महत्वपूर्ण उपयोग था। सिन्धु नदी के किनारे की भूमि उपजाऊ होने के कारण हड़प्पा वासी व्यापक पैमाने पर खेती–बारी किया करते थे, कृषि कार्य में खेतों को जोतने बोने के लिए पशु ही सहायक होता रहा होगा, निश्चित ही पशुओं का उपयोग खेती– बारी में किया जाता रहा होगा। भूमि की उर्वरता को बढ़ाने के लिए खाद और व्यापारिक फसलों के उत्पादन में पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा होगा। साथ ही पशुओं के माँस और उनके द्वारा प्राप्त दूध आदि का उपयोग खाद्य रूप मे किये जाने से पशुओं की सर्वाधिक उपयोगिता रही होगी। हड़प्पा सभ्यता में पशु धन का महत्व आर्थिक दृष्टि से ही नहीं अपितु धार्मिक दृष्टि से भी प्रतीत होता है। हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त पशुओं की मूर्तियाँ चिकनी मिट्टी, सिरवादी तथा सामान्य मिट्टी की ही अधिकतर बनी हैं। मिट्टी के निर्मित ये पशु मूर्तिया कम पकाये गये हैं। इनके ऊपर हल्के रंग में लाल पालिश का लेप किया गया है, कुछ उदाहरणों में हल्के पीले रंग का भी उपयोग हुआ है। यह भी कहा जा सकता है कि इन पशुओं के सजावट में नाना प्रकार के रंग प्रयोग में लाये जाते थे। हड़प्पा सभ्यता का सबसे प्रिय पशु बैल था। बैलों की मूर्तियों में छोटे सींग वाले बिना कूबड़ तथा कूबड़दार दोनों ही नस्ल के बैलों की मूर्तियाँ पाई गयी हैं। बैलों की जैसी उत्तम आकृति मोहरों पर है वैसी ही मिट्टी की बनी हुई मूर्तियों में भी देखने को मिलता है। इसमें पशु के भीतर छिपी हुई शक्ति, तगड़ी गर्दन दिखायी गई है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त छोटे सींगधारी बैल की एक मृण्मूर्ति में उसके मांसल शरीर और भाव भंगिमा को अति आकर्षक रूप में प्रदर्शित किया गया है। मोहनजोदड़ो से ही एक अन्य बैल की अति सुन्दर मूण्मूर्ति प्राप्त हुई है, जिसको हाथ से बड़ी कुशलता पूर्वक निर्मित किया गया है।[11] कलाकार ने पशु के अंग प्रत्यंग को ठीक और सन्तुलित रूप देने के लिए चाकू का स्वतन्त्र प्रयोग किया है। चन्हूदड़ो से मिट्टी की बनी अनेक बैलों की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यहाँ से प्राप्त एक बैल के सींग के सिरे पर छिद्र बना है। सम्भवतः इसमें मुँदरी जैसी किसी वस्तु को पहनाया जाता रहा हो। मैके महोदय ने अनुमान व्यक्त किया कि इन छिद्रों में लकड़ी डालकर बच्चे गाड़ी की तरह चलाते रहे होंगे।[12] लोथल के उत्खनन में राव को गाय की दो मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुयी थी, किन्तु हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से गाय की एक भी मृण्मूर्ति नहीं प्राप्त हुई हैं। मोहनजोदड़ो से एक घोड़े जैसी आकृति की मूर्ति प्राप्त हुयी है, जिसकी पूँछ और कान खण्डित है।[13] इससे यह ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग घोड़े से परिचित थे। हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त मिट्टी की बनी हुई अन्य पशु–पक्षियों की आकृतियों में हाथी, गैंडा, कुत्ता, सुअर, बन्दर, बकरा, भेड़, भैंस, कबूतर, हंस आदि हैं। हाथी की मूर्तियाँ कम प्राप्त होती हैं और इसका अधिकांशतः चित्रण मुद्राओं पर किया गया है। चन्हूदड़ो से प्राप्त इस जानवर को महाकाय रूप में भौडे ढंग से प्रदर्शित किया गया है।[14]

इसकी पीठ पर अलंकरण किया गया है, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि वह किसी विशेष अवसर के लिए सजाया जाता था। हड़प्पा से जो सुअर की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं उन पर प्रायः हरा रंग लगाया गया है। बन्दर की मूर्तियों में स्वाभाविकता का दर्शन होता है। इन पशु पक्षियों की मूर्तियों में चिकनी मिट्टी की बनी गिलहरियाँ भी दर्शनीय हैं, ये पूँछ ऊपर किये प्रायः पिछले पैरों पर बैठी खड़ी हैं। इनके पैरों के बीच में कोई खाद्य वस्तु है जो वह खाती हुयी प्रदर्शित की गयी हैं। मोहनजोदड़ो तथा हड़प्पा से चिकनी मिट्टी के भेड़े प्राप्त हुए हैं, जिसे बहुत सावधानी से निर्मित किया गया है। जलचरों में घड़ियाल, कच्छप, मछली की मिट्टी की बनी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। मिट्टी की बनी इस छोटी–छोटी पशु आकृतियों का निर्माण हाथ से ही किया गया है।

बच्चों के खिलौने –

बच्चों को खेलने के लिए मिट्टी के खिलौने का निर्माण अति प्राचीन काल से ही होता आ रहा है, विश्व की सभी प्राचीन संस्कृतियों में खिलौने बनते रहे हैं। पकाई हुई सैकड़ों मिट्टी के बने हुए बच्चों के खिलौने मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, चन्हूदड़ो तथा अन्य हड़प्पा सभ्यता के स्थलों से प्राप्त हुये हैं, जिनके रूप कलाकारों की हस्त लाघनता और कल्पना शक्ति का स्पष्ट परिचय देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें से कुछ मूर्तियों का निर्माण स्वयं बच्चों के द्वारा भी किया जाता था, क्योंकि मूर्तियाँ भोंडी शक्ल की हैं। हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों से प्राप्त वृषभ, गज, बन्दर, सुअर, गैडे, महिष, कुत्ता, गिलहरी, खरगोश आदि की मूर्तियों के अधिकांश नमूनों की गणना बच्चों के खिलौने के रूप में की जा सकती है। जिन मूर्तियों के निर्माण में बहुत सावधानी नहीं दिखायी गई हैं वे ही बच्चों के खिलौने ही हैं। एक बन्दर जैसी आकृति का पशु मिला है जिसके हाथ के घुमाने पर पूरा शरीर घूमने लगता है। इसी प्रकार एक बैल का सिर हिलता है। इसकी पीठ से लेकर पैरों के पीछे तक छिद्र बने हैं। एक पशु के नमूने में भेड़ का शरीर दिखाया गया है, किन्तु शरीर तथा पूँछ किसी चिड़िया की लगती है। इसके शरीर के दोनों तरफ छिद्र निर्मित है, जिसके सम्बन्ध में मार्शल महोदय का अनुमान है कि सम्भवतः लकड़ी पर दोनों तरफ से पहिये लगाकर इसे गाड़ी का रूप दिया जाता रहा होगा[15] तथा यह भी सम्भावना व्यक्त की जा सकती है कि छिद्र में लकड़ी डालकर और उसके दोनों कोने पर रस्सी बाँधकर इन पशुओं को झुलाया भी जाता रहा हो। हड़प्पा सभ्यता से अनेक ऐसी पशु–पक्षी आकृति वाली सीटियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनके बगल तथा सिर पर छिद्र बने हुये हैं। बगल के छिद्र को बन्दकर तथा सिर के छिद्र से फूक मारने पर एक विचित्र ध्वनि उत्पन्न होती है। यहाँ कुछ पक्षियों को तो पिंजड़ों में बन्द दिखाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उस युग में भी लोग पक्षियों को पालते थे। पंख फैलाये हुए बत्तख के अनेक खिलौने विभिन्न स्तरों पर मिले हैं। मैके महोदय के अनुसार हड़प्पा सभ्यता तथा सुमेर के प्रधान नगरों में बत्तख का विशेष महत्त्व था।[16] मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक हंस के खिलौने में उसके खुले हुए मुँह को दिखाकर सम्भवतः उसके कलख की मुद्रा का प्रदर्शन किया गया है।[17] खुदाई में घुटने के बल बैठे हुए बन्दरों की कई आकृतियाँ मोहनजोदड़ो से मिली हैं,[18] जो चीनी मिट्टी से निर्मित है तथा ऊपरी सतह से नील गाय के भी कई खिलौने प्राप्त हुए हैं।

मृदभाण्डों पर चित्रित आकृतियाँ एवं अलंकरण –

हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों से मृदभाण्डों के अनेक प्रकार मिले हैं, इसके निर्माण के लिए मिट्टी में कभी बालू, कभी चूना और कभी दोनों ही पदार्थ मिश्रित रूप में प्रयोग में लाये गये हैं। यद्यपि सभी बर्तनों का निर्माण व्यावहारिक उपयोगिता को ही दृष्टि में रखकर किया गया है। भाण्डों को भट्ठे में पकाने से उनका रंग कभी गहरा या हल्का लाल तथा कभी नीला हो गया है, मोहनजोदड़ो के उत्खनन से एक ही स्थान से छः मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं। इस आधार पर पिगट महोदय का अनुमान है कि उस स्थान पर कुम्हारों का निवास रहा होगा।[19] ऐसा प्रतीत होता है कि मृद्भाण्डों पर किसी विशेष पदार्थ का लेप लगाकर उसे विभिन्न रंगों में भी प्रदर्शित किया जाता था। मृद्भाण्डों की बाहरी सतह कलाकारों द्वारा अनेक स्वाभाविक तथा कल्पना प्रसूत डिजाइनों से सजाया गया है। मृद्भाण्डों पर दो वृत्तों के मध्य बिन्दु, जाली, ज्यामितीय रेखाएँ, चापड़ तख्ती पर निर्मित समचतुरस्र आदि का अंकन मिलता है। मृद्भाण्ड को विविध ज्यामितीय डिजाइनों से सजाने के अतिरिक्त उसके बाहरी सतह पर कलाकारों द्वारा पशु, वृक्ष, पत्ती आदि को भी चित्रित किया गया है। हड़प्पा से मिले कुछ मृद्भाण्डों पर मानव आकृतियों का भी प्रदर्शन हुआ है। हड़प्पा से प्राप्त मृद्भाण्ड के बाह्य सतह पर जाल द्वारा मछली मारते हुए मछुवारों का अंकन किया गया है। चन्हूदड़ो से प्राप्त एक बर्तन की सतह पर बकरी पेड़ के पत्तों को चुनती हुई दिखाई गई है।[20] हड़प्पा से प्राप्त एक बर्तन पर अंकित एक दृश्य में भी बकरे का चित्रण किया गया है।[21] मोहनजोदड़ो तथा चन्हूदड़ो के बर्तन पर हिरण को भी चित्रित किया गया है जिसके लम्बे सींगों तथा पूँछ के सिरे पर गुच्छे बनाये गये हैं। पात्रों पर मोर का चित्रण सुन्दर ढंग से दिखाया गया है उसके समीप वृक्षों को दिखाकर उद्यान में विचरण करते हुए मोर को स्वाभाविक रूप से अंकित किया गया है। मृद्भाण्ड के ऊपरी सतह पर खजूर, पीपल तथा नीम आदि वृक्षों की पत्तियों के संभार से सजाया गया है। हड़प्पा के एक शव स्थान से मिले पात्र पर कुछ विचित्र पशुओं को बाँधे हुए चोंचधारी पशुओं को चित्रित किया है, बाँयी ओर एक पशु की ओर झपटते हुए कुत्ते का दृश्य है। कुत्ते ने पशु की पूँछ को मुँह में दबा लिया है। इस दृश्य के ऊपर अपने सींगों पर आठ त्रिशूल धारण किये हुए बकरे को दिखाया गया है। पात्र के दूसरी तरफ भी इसी प्रकार का अलौकिक दृश्य चित्रित किया गया है। एम०एस० वत्स ने पात्र पर चित्रित इस दृश्य का अभिज्ञान भारतीय पारलौकिक मान्यता में कल्पित मृत आत्माओं द्वारा वैतरणी नदी पार कर यमलोक की सीमा में प्रवेश की कल्पना के

रूप मे किया है।[22] इसी प्रकार मृद्भाण्डों पर चित्रित अन्य पशुओं में खरगोश, बकरी, साँप, गिलहरी और मछलियाँ आदि हैं। इस प्रकार हड़प्पा कालीन मृण्मूर्तियों का लोककला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा। अन्य कालों में भी लोक कला से सम्बन्धित मृण्मूर्तियों का निर्माण होता रहा।

सन्दर्भ :

1. मैके, अरनेस्ट, चन्हूदड़ो एक्सकेवेशन, चित्र, 104.
2. मेमायर्स ऑफ दि आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, संख्या 43, पृ० 126.
3. अग्रवाल, वासुदेव शरण, भारतीय कला, पृ० 28.
4. वही, पृ० 24.
5. अग्रवाल, वासुदेव शरण, स्टडीज इन इण्डियन आर्ट, चित्र 18.
6. पिगट, स्टुअर्ट, प्री–हिस्टॉरिक इण्डिया, पृ० 152
7. अग्रवाल, वासुदेव शरण, भारतीय कला, पृ० 29,
8. वत्स, माधोस्वरूप, एक्सकेवेशन एट हड़प्पा, भाग एक, पृ० 300.
9. मैके, अरनेस्ट, फरदर एक्सकेवेशन एट मोहनजोदड़ो, भाग एक, पृ० 266.
10. मैके, अरनेस्ट, द इण्ड्स सिविलाइजेशन, पृ० 93.
11. मैके, अरनेस्ट, चन्हूदड़ो एक्सकेवेशन, एट मोहनजोदड़ो, भाग एक, पृ० 288.
12. वही, पृ० 156.
13. मैके, अरनेस्ट, फरदर एक्सकेवेशन एट मोहनजोदड़ो, भाग एक, पृ० 289.
14. मैके, अरनेस्ट, चन्हूदड़ो एक्सकेवेशन, पृ० 156.
15. मार्शल, मोहनजोदड़ो एण्ड दी इण्ड्स सिविलाइजेशन, भाग दो, पृ० 550.
16. वही, भाग एक, पृ० 295.
17. मैके, अरनेस्ट, फरदर एक्सकेवेशन एट मोहनजोदड़ो, भाग दो, चित्र 70.
18. मार्शल, मोहन जोदड़ो एण्ड दी इण्ड्स सिविलाइजेशन, भाग दो, पृ० 16.
19. पिगट, स्टुअर्ट, प्री हिस्टॉरिक इण्डिया, पृ० 191.
20. मैके, अरनेस्ट, चन्हूदड़ो एक्सकेवेशन, पृ० 6.
21. वत्स, माधोस्वरूप, एक्सकेवेशन एट हड़प्पा, भाग एक पृ० 208.
22. वही, भाग एक, पृ० 207.